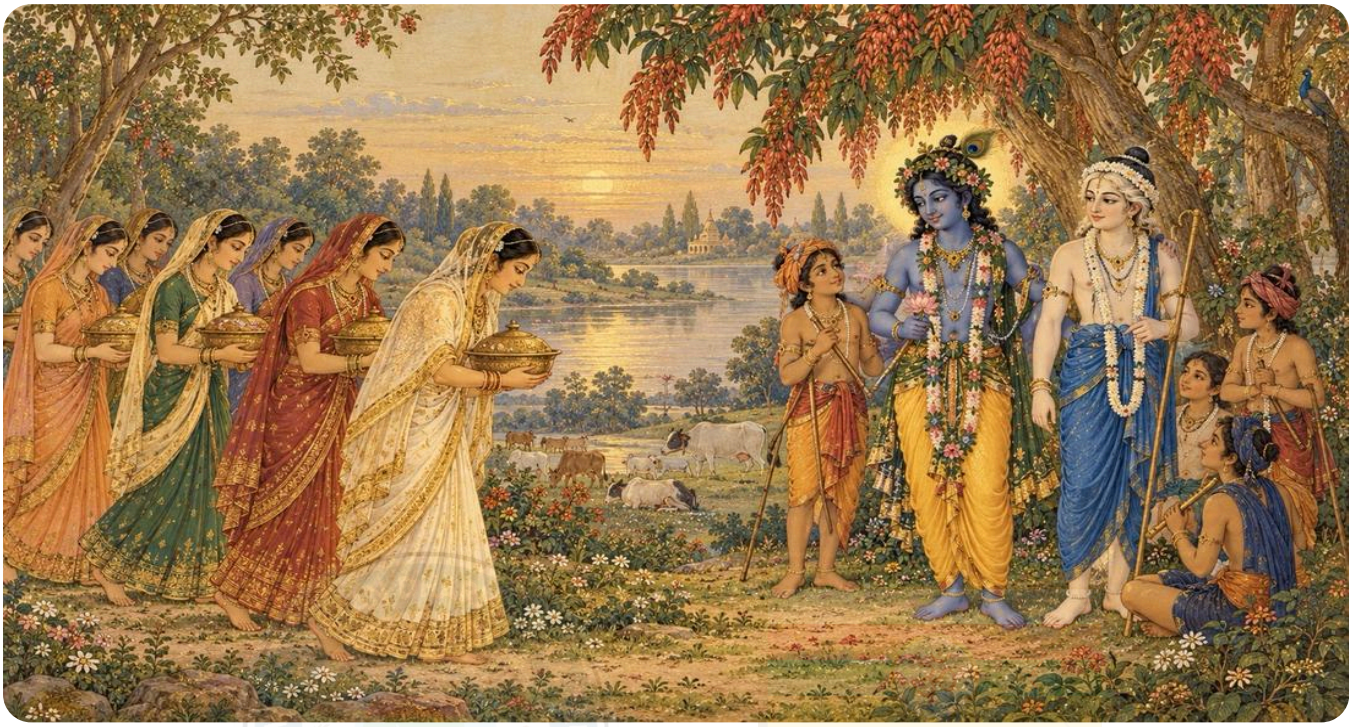
श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 23 — ब्राह्मण-पत्नियों पर कृपा

5 October 2026



स्वर्ग की कामना से यज्ञ में लगे ब्राह्मण अपने द्वार पर थोड़ा-सा अन्न माँगते प्रभु को लौटा देते हैं; उनकी पत्नियाँ, जिन्होंने केवल उनकी कथा सुनी थी, भोजन के पात्र लेकर उन तक पहुँचती हैं और कृष्ण उन्हें अपना बना लेते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज़्डम में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध का यह तेईसवाँ अध्याय एक बहुत छोटी-सी बात — ग्वालबालों की भूख — से आरम्भ होता है, और उसी से प्रभु यह शिक्षा निकालते हैं कि उन्हें सचमुच कौन पहचानता है।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 23 (त्रयोविंश अध्याय)

- अध्याय शीर्षक: ब्राह्मण-पत्नियों पर कृपा
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को सुनाते हुए)
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: वृन्दावन के समीप यमुना-तट के उपवन और पास की ब्राह्मणों की यज्ञशाला
- केंद्रीय विषय: ब्राह्मणों द्वारा प्रभु की अन्न-याचना का तिरस्कार; उनकी पत्नियों का प्रेमपूर्वक कृष्ण-बलराम को भोजन कराना; भक्ति पर भगवान का उपदेश; ब्राह्मणों का पश्चात्ताप
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 23, श्लोक 1–52
- मूल संस्करण: गीता प्रेस *श्रीमद्भागवत महापुराण*

पूर्व अध्याय का संदर्भ

बाईसवें अध्याय में गोपियों के वस्त्र-हरण की लीला के बाद कृष्ण ग्रीष्म की तपन में बलराम और ग्वालबालों के साथ वृन्दावन से दूर निकल गए, परोपकार के लिए जीने वाले वृक्षों की प्रशंसा की और गायों को यमुना-तट पर ले आए, जहाँ भूख से व्याकुल ग्वालबाल दोनों भाइयों के पास आए।

ग्वालबालों की भूख

ग्वालबालों ने बलराम और कृष्ण के सामने आकर सरल भाव से कहा: ‘हे राम, हे महापराक्रमी राम, हे दुष्टों का नाश करने वाले कृष्ण, यह भूख हमें सता रही है; कृपा करके इसे शान्त कीजिए।’

देवकीनन्दन भगवान ने, अपनी भक्त कुछ ब्राह्मण-पत्नियों पर कृपा करने की इच्छा से, एक अप्रत्याशित उत्तर दिया: ‘उस यज्ञशाला में जाओ जहाँ वेदवादी ब्राह्मण स्वर्ग की कामना से आङ्गिरस नामक यज्ञ कर रहे हैं। मेरे पूज्य बड़े भाई का और मेरा नाम लेकर उनसे पका हुआ अन्न माँगो।’



गायें चराने के बाद भूख से व्याकुल ग्वालबाल बलराम और कृष्ण से भोजन माँगते हैं, और प्रभु उन्हें आङ्गिरस यज्ञ करते ब्राह्मणों से अन्न माँगने भेजते हैं (श्लोक 1–4)।

ब्राह्मण जिन्होंने सुनकर भी नहीं सुना

हाथ जोड़े ग्वालबाल ब्राह्मणों के सामने भूमि पर दण्डवत् गिरे और विनयपूर्वक बोले: 'हे भूदेवो, हमारी बात सुनिए। हम कृष्ण की आज्ञा का पालन करने वाले ग्वालबाल हैं; बलराम ने हमें यहाँ भेजा है। बलराम और अच्युत कृष्ण पास ही गायें चरा रहे हैं और भूखे हैं। वे आपसे पका अन्न चाहते हैं; यदि आपके पास हो और उनमें श्रद्धा हो, तो दीजिए, हे धर्मवेत्ताओं में श्रेष्ठ।' उन्होंने यह नियम भी स्मरण कराया कि पशु-यज्ञ और सौत्रामणि को छोड़कर, यज्ञ के लिए दीक्षित गृहस्थ का अन्न खाने वाला भी दूषित नहीं होता।

> इति ते भगवद्याच्ञां शृण्वन्तोऽपि न शुश्रुवु: ।
> क्षुद्राशा भूरिकर्माणो बालिशा वृद्धमानिन: ॥ ९ ॥

iti te bhagavad-yācñāṁ śṛṇvanto 'pi na śuśruvuḥ kṣudrāśā bhūri-karmāṇo bāliśā vṛddha-māninaḥ

अर्थ: प्रभु की यह याचना सुनकर भी ब्राह्मणों ने उस पर ध्यान नहीं दिया; बड़े-बड़े कर्मों में लगे रहकर भी वे तुच्छ आशाएँ पालने वाले और अपने को बड़ा मानने वाले बालिश थे। (स्कन्ध 10, अध्याय 23, श्लोक 9)

शुकदेवजी उनकी चूक का मूल खोल देते हैं। यज्ञ का देश और काल, उसकी सामग्री, मन्त्र और विधि, ऋत्विज, अग्नियाँ और देवता, यजमान, यज्ञ-कर्म और उसका धर्मफल — ये सब प्रभु ही हैं। वही साक्षात् परब्रह्म अधोक्षज, जो इन्द्रियों से परे हैं, अपनी याचना उनके द्वार तक भेज चुके थे; किन्तु नश्वर देह को ही आत्मा मानने वाले उन लोगों ने उनमें केवल एक मनुष्य-बालक देखा। उन्होंने न 'हाँ' कहा, न 'ना', और निराश ग्वालबाल लौटकर कृष्ण-बलराम को सब बता गए।



हाथ जोड़े दण्डवत् ग्वालबाल कृष्ण और बलराम के नाम से ब्राह्मणों से अन्न माँगते हैं; अपने कर्मकाण्ड में तल्लीन ब्राह्मण न 'हाँ' कहते हैं, न 'ना' (श्लोक 5–12)।

भगवान हँसे और पत्नियों के पास भेजा

यह सुनकर जगदीश्वर ठठाकर हँस पड़े और ग्वालबालों से फिर बोले — यह दिखाते हुए कि संसार की रीति में एक बार ठुकराया गया याचक हिम्मत नहीं हारता: 'उनकी पत्नियों को बताओ कि मैं सङ्कर्षण के साथ यहाँ आया हूँ। वे स्नेहमयी हैं और मन से मुझमें ही बसती हैं; वे तुम्हें इच्छानुसार अन्न देंगी।'

यजमानों की पत्नियों के लिए नियत कक्ष में ग्वालबालों ने सुसज्जित, पतिव्रता ब्राह्मणियों को बैठे देखा। प्रणाम करके उन्होंने कहा: 'हे विप्र-पत्नियो, आपको नमस्कार। पास ही विचरते कृष्ण ने हमें भेजा है। वे बलराम और ग्वालबालों के साथ गायें चराते हुए दूर निकल आए हैं। उन्हें और उनके भूखे साथियों को भोजन दिया जाए।'

सागर की ओर नदियों की भाँति

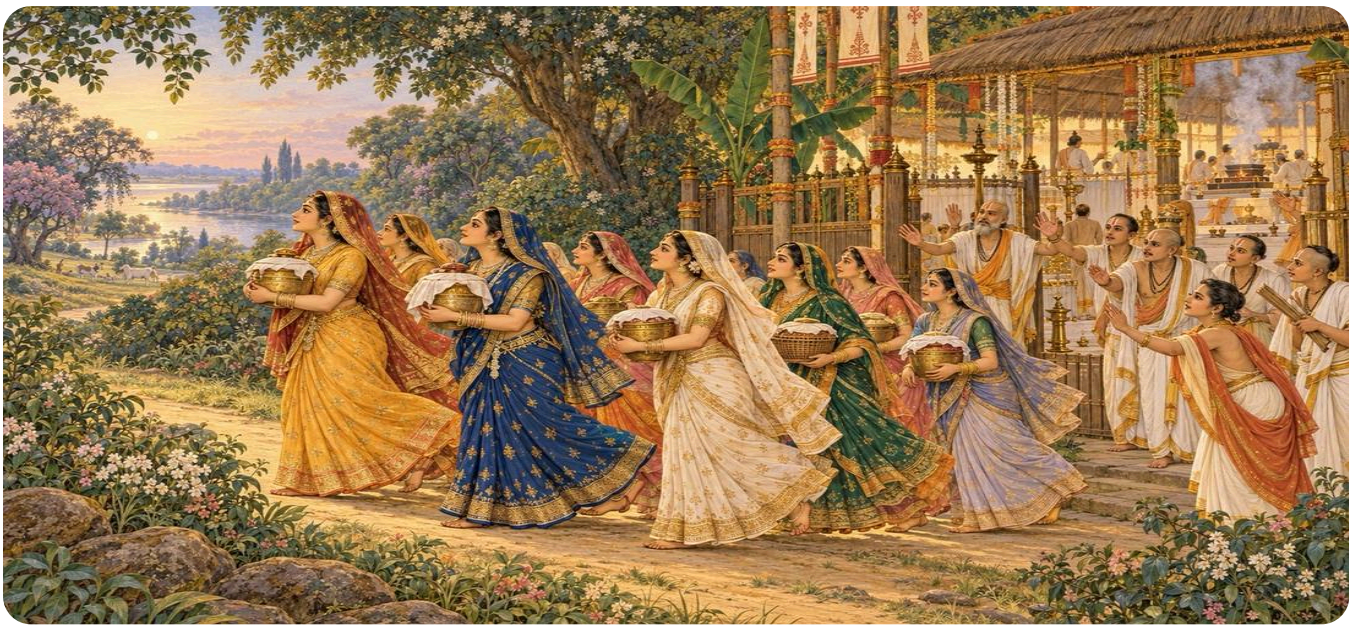
अच्युत के इतने पास आने की बात सुनते ही वे स्त्रियाँ आनन्द से विह्वल हो उठीं; बहुत दिनों से वे उनके दर्शन को उत्सुक थीं, और सुनी हुई उनकी कथाओं ने उनके मन को पहले ही बाँध रखा था।

> चतुर्विधं बहुगुणमन्नमादाय भाजनैः ।
> अभिसस्रुः प्रियं सर्वाः समुद्रमिव निम्नगाः ॥ १९ ॥

catur-vidhaṁ bahu-guṇam annam ādāya bhājanaiḥ abhisasruḥ priyaṁ sarvāḥ samudram iva nimnagāḥ

अर्थ: पात्रों में चार प्रकार का उत्तम अन्न लेकर वे सब अपने प्रियतम की ओर वैसे ही दौड़ पड़ीं जैसे नदियाँ समुद्र की ओर बहती हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 23, श्लोक 19)

पतियों, भाइयों, बन्धुओं और पुत्रों ने उन्हें रोकना चाहा, पर व्यर्थ; उत्तमश्लोक भगवान के विषय में जो कुछ उन्होंने सुना था, उसी से उनका हृदय कब का उनमें बँध चुका था।



कृष्ण के पास आने की बात सुनते ही ब्राह्मण-पत्नियाँ भोजन के पात्र उठाकर नदियों की तरह उनकी ओर दौड़ पड़ती हैं, यद्यपि पति और स्वजन उन्हें रोकने का प्रयत्न करते हैं (श्लोक 18–20)।

यमुना-तट के उस उपवन में, जो अशोक की नई कोंपलों से सुशोभित था, उन्होंने अन्ततः उन्हें देखा — बड़े भाई के साथ, ग्वालबालों से घिरे हुए विचरते। श्याम वर्ण, कमर में सुनहरा वस्त्र, वनमाला, मोरपंख और नई कोंपलों से सजे, धातुओं के रंगों से रंगे हुए, मानो रंगमंच पर कोई नट हों; एक हाथ सखा के कन्धे पर, दूसरे में घूमता कमल; कानों में कुमुद-पुष्प, कपोलों पर घुँघराली अलकें और मुखकमल पर मुस्कान। नेत्रों के द्वार से उन स्त्रियों ने उन्हें हृदय में उतार लिया, जिनकी कीर्ति इतने दिनों से उनके कानों का आभूषण बनी थी, और भीतर ही भीतर उन्हें देर तक आलिंगन कर वे विरह की जलन से वैसे ही मुक्त हो गईं जैसे अहंकार से बँधे जन किसी ज्ञानी को पाकर अपने सन्ताप से छूट जाते हैं।

भगवान का स्वागत और भक्ति का उपदेश

सबके हृदय के साक्षी कृष्ण जानते थे कि वे केवल उनके दर्शन के लिए आई हैं — अपने स्वजनों की अवहेलना करके और लौटने की हर आशा त्यागकर। मुस्कुराते हुए उन्होंने कहा: ‘हे महाभागाओ, आपका स्वागत है। बैठिए। हम आपके लिए क्या करें? मेरे दर्शन की लालसा से आपका यहाँ आना सर्वथा उचित है।’



अशोक-उपवन में बलराम के साथ विराजमान कृष्ण ब्राह्मण-पत्नियों का अपनों की तरह स्वागत करते हैं और यज्ञशाला से लाए उनके अर्पण स्वीकार करते हैं (श्लोक 24–25, 35)।

फिर उन्होंने उस भक्ति की बात कही जिसे ये स्त्रियाँ जी चुकी थीं।

> नन्वद्धा मयि कुर्वन्ति कुशला: स्वार्थदर्शिन: ।
> अहैतुक्यव्यवहितां भक्तिमात्मप्रिये यथा ॥ २६ ॥

nanv addhā mayi kurvanti kuśalāḥ svārtha-darśinaḥ ahaituky avyavahitāṁ bhaktim ātma-priye yathā

अर्थ: निश्चय ही अपने सच्चे हित को देखने वाले विवेकी जन मुझमें — जो उनका अपना प्रियतम आत्मा हूँ — साक्षात्, अहैतुकी और अव्यवहित भक्ति करते हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 23, श्लोक 26)

उन्होंने पूछा — अपनी आत्मा से प्रिय और कौन हो सकता है, जिसके सम्बन्ध से ही प्राण, बुद्धि, मन, देह, स्वजन, पत्नी, सन्तान और धन प्रिय लगते हैं? और फिर उन्होंने कहा: 'अब यज्ञशाला को लौट जाइए। आपके पति, गृहस्थ ब्राह्मण, आपके सहयोग से अपना यज्ञ पूर्ण करेंगे।'

पत्नियों की प्रार्थना और भगवान का आश्वासन

स्त्रियों ने उत्तर दिया: 'हे प्रभो, आपको ऐसे कठोर वचन कहना शोभा नहीं देता। वेद के इस वचन को सत्य कीजिए कि जो आपके पास आ जाता है, वह लौटता नहीं। समस्त स्वजनों को लाँघकर हम आपके चरणों की शरण में आई हैं, ताकि आपके चरणों से गिरी तुलसी की माला को अपने केशों में धारण करें। हमारे पति हमें स्वीकार नहीं करेंगे, न माता-पिता, पुत्र, भाई, बन्धु या मित्र; फिर पराए कैसे अपनाएँगे? हे अरिन्दम, ऐसा कीजिए कि आपके चरणों में गिरी हुई हमारे लिए और कोई गति शेष न रहे।'

प्रभु का उत्तर कोमल भी था और दृढ़ भी: 'आपके पति, माता-पिता, भाई, पुत्र और अन्य सब आपसे रुष्ट नहीं होंगे, क्योंकि आप मेरी कृपा पा चुकी हैं; देवता भी आपके इस आचरण का अनुमोदन करते हैं।'

> न प्रीतयेऽनुरागाय ह्यङ्गसङ्गो नृणामिह ।
> तन्मनो मयि युञ्जाना अचिरान्मामवाप्स्यथ ॥ ३२ ॥

na prītaye 'nurāgāya hy aṅga-saṅgo nṛṇām iha tan mano mayi yuñjānā acirān mām avāpsyatha

अर्थ: इस संसार में मेरे साथ देह का संग मनुष्यों की प्रीति या अनुराग को नहीं बढ़ाता। इसलिए अपना मन मुझमें लगाओ; शीघ्र ही तुम मुझे प्राप्त करोगी। (स्कन्ध 10, अध्याय 23, श्लोक 32)

लौटना और वन में भोजन

ऐसा उपदेश पाकर ब्राह्मण-पत्नियाँ लौट गईं, और उनके पतियों ने उनमें कोई दोष न देखकर उनके साथ यज्ञ पूर्ण किया। केवल एक स्त्री को उसके पति ने बलपूर्वक रोक लिया था; जैसा उसने भगवान के विषय में सुना था, वैसा ही उन्हें हृदय में आलिंगन कर उसने कर्मों से बना अपना शरीर त्याग दिया।

तब सर्वसमर्थ गोविन्द ने स्त्रियों के लाए चार प्रकार के अन्न से ग्वालबालों को भोजन कराया और उसके बाद स्वयं भोजन किया। इस प्रकार लीला के लिए मनुष्य-सा रूप धारण किए प्रभु मनुष्यों की रीति का अनुसरण करते हुए अपने रूप, वाणी और कर्मों से व्रज की गायों, गोपों और गोपियों को आनन्दित करते रहे।

ब्राह्मणों का पश्चात्ताप

बाद में ही ब्राह्मणों की आँखें खुलीं: उन्होंने मनुष्य का अभिनय करते विश्वेश्वर बलराम और कृष्ण की याचना ठुकराई थी। अपनी पत्नियों में भगवान कृष्ण के प्रति अलौकिक भक्ति देखकर और स्वयं को उससे रहित पाकर वे अपनी घोर निन्दा करने लगे। 'धिक्कार है हमारे तीन प्रकार के जन्म को, हमारी विद्या को, हमारे व्रत, बहुज्ञता, कुल और कर्मकौशल को,' वे बोले, 'जब हम अधोक्षज से ही विमुख हो गए। सचमुच भगवान की माया बड़े-बड़े योगियों को भी मोह लेती है; तभी तो हम, जो मनुष्यों के गुरु हैं, अपने ही सच्चे हित को भूल बैठे।'

> अहो पश्यत नारीणामपि कृष्णे जगद्गुरौ ।
> दुरन्तभावं योऽविध्यन्मृत्युपाशान् गृहाभिधान् ॥ ४२ ॥

aho paśyata nārīṇām api kṛṣṇe jagad-gurau duranta-bhāvaṁ yo 'vidhyan mṛtyu-pāśān gṛhābhidhān

अर्थ: अहो, देखो — जगद्गुरु कृष्ण में इन स्त्रियों की भी कैसी अपार भक्ति है, जिसने 'घर' नाम से पुकारे जाने वाले मृत्यु-पाशों को काट डाला! (स्कन्ध 10, अध्याय 23, श्लोक 42)



यज्ञाग्नि के पास बैठे ब्राह्मण स्मरण करते हैं कि उन्होंने प्रभु को लौटा दिया था, और अपनी पत्नियों की भक्ति देखकर अपने जन्म, विद्या और कर्मकौशल को धिक्कारते हैं (श्लोक 38–44)।

इन स्त्रियों का न उपनयन-संस्कार हुआ, न ये गुरुकुल में रहीं, न इन्होंने तप, आत्म-विचार, शौच या शुभ कर्म किए; फिर भी योगेश्वरों के ईश्वर कृष्ण में इनकी दृढ़ भक्ति है, और हममें, जिनके पास ये सारी योग्यताएँ हैं, वह कहीं नहीं। 'कितनी कृपा,' वे बोले, 'कि सन्तों के आश्रय प्रभु ने ग्वालबालों के वचनों से हमें जगाया — हमें, जो गृहकार्यों में उन्मत्त और अपने हित से अन्धे थे। जो पूर्णकाम हैं और मोक्ष तक देने वाले हैं, वे हमसे क्या चाहते? उनका माँगना तो केवल लीला था। स्वयं लक्ष्मी उनके चरण-स्पर्श की आशा में उनकी सेवा करती हैं; ऐसे प्रभु का अन्न माँगना संसार को मोहित कर देता है।'

अब उन्हें वह दिखा जो वे चूक गए थे: जो स्वयं यज्ञ के हर अंग और उसके फल हैं — वही साक्षात् भगवान विष्णु यदुकुल में अवतरित हुए हैं, यह उन्होंने सुना था; फिर भी मूढ़ होकर वे उन्हें पहचान न सके। उन्होंने स्वयं को परम धन्य कहा कि उन्हें ऐसी पत्नियाँ मिलीं, जिनकी भक्ति से अब उनका मन भी हरि में अचल हो गया। अकुण्ठ बुद्धि वाले भगवान कृष्ण को प्रणाम कर उन्होंने स्वीकार किया कि उनकी माया से मोहित होकर ही वे कर्म-मार्गों में भटकते रहे, और प्रार्थना की: 'वे आदिपुरुष हमारे अपराध को क्षमा करें, जो उनकी माया से मोहित होकर उनकी महिमा न जान सके।'

अपने अपराध को बार-बार स्मरण करते हुए, कृष्ण की अवहेलना करने वाले वे ब्राह्मण दोनों भाइयों के दर्शन के लिए व्रज जाना चाहते थे; किन्तु कंस के भय से वे हिले नहीं।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. प्रभु को पहचाने बिना कर्मकाण्ड खोखला है। वेदों में निपुण होकर भी ब्राह्मणों ने प्रभु की याचना अनसुनी कर दी (श्लोक 9), क्योंकि उन्हें केवल एक बालक दिखा; जो यज्ञ उन्हें नहीं पहचानता, जो स्वयं यज्ञ के हर अंग हैं, वह अपना लक्ष्य चूक जाता है।

2. प्रभु उन्हें खोज लेते हैं जो उन्हें हृदय में रखते हैं। कृष्ण ग्वालबालों को पत्नियों के पास यह जानकर भेजते हैं कि वे अवश्य देंगी, क्योंकि उनका मन पहले से उनमें बसा है। प्रेम से सुनी प्रभु की कथा वही स्थान बन जाती है जहाँ वे हमें मिलने आते हैं।

3. सच्ची भक्ति हर बाधा को पार कर जाती है। पतियों और स्वजनों की रोक के बावजूद पत्नियाँ नदियों की तरह कृष्ण की ओर दौड़ पड़ीं (श्लोक 19)।

4. प्रभु ही प्रियतम आत्मा हैं, और मन की निकटता ही उन तक पहुँचाती है। विवेकी जन उन्हें अपने प्रिय आत्मा के रूप में अहैतुकी, अखण्ड भक्ति अर्पित करते हैं (श्लोक 26), और देह की निकटता नहीं, उनमें लगा मन ही उन्हें प्राप्त कराता है (श्लोक 32)।

5. योग्यता नहीं, भक्ति ही मृत्यु-पाश काटती है। एक भी कर्मकाण्डीय योग्यता के बिना पत्नियों ने भक्ति से गृह-बन्धन काट दिए (श्लोक 42)। सच्चा प्रेम जन्म, विद्या और विधि से बढ़कर है।

एक भक्तिमय चिन्तन

प्रभु यहाँ सब कुछ कितनी कोमलता से रचते हैं। वे ऐसे भूखे नहीं जिन्हें अन्न तृप्त कर सके; वे स्वयं यज्ञ हैं। फिर भी वे अन्न की एक याचना के साथ अपना नाम यज्ञशाला तक जाने देते हैं, ताकि जो स्त्रियाँ श्रवण से चुपचाप उन्हें प्रेम करती आई थीं, वे उनके सामने खड़ी हो सकें, और उनके विद्वान् पति लज्जा के द्वारा वह बात जान लें जो उनकी विद्या से छूट गई थी। प्रभु किसी की भर्त्सना नहीं करते: पत्नियाँ कृपा पाती हैं, ब्राह्मण जाग उठते हैं, और जो स्त्री जा न सकी, वह भी घर के भीतर से ही उन्हें हृदय में आलिंगन कर लेती है। हम कभी वे स्त्रियाँ हैं, जो हर 'ना' कहने वाले स्वर को लाँघकर अपना अर्पण ले जाती हैं, और कभी वे ब्राह्मण, जो सब कुछ ठीक-ठीक करने में इतने व्यस्त हैं कि द्वार पर खड़े प्रभु को देख ही नहीं पाते। कृष्ण के विषय में जो सुना है, उसे हम हृदय में तब तक थामे रहें जब तक वह उनकी ओर चल पड़ने योग्य प्रेम न बन जाए; और जब पाएँ कि हमने उन्हें लौटा दिया है, तो सच्चे पश्चात्ताप से उनके चरणों में गिर पड़ें।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज भोजन से पहले क्षण भर रुककर प्रेम के कुछ शब्दों के साथ उसे हृदय में प्रभु को अर्पित करें — उन स्त्रियों को स्मरण करते हुए जो कृष्ण-बलराम को भोजन कराने के लिए अपने पात्र लेकर वन से होकर गईं; और यदि कोई आपसे सहायता माँगे, तो उस याचना को ऐसे लें मानो उसमें उनका नाम हो। आरम्भ और अन्त में जपें: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

उपसंहार

दशम स्कन्ध का यह तेईसवाँ अध्याय दो समूहों के द्वारा हमारे सामने एक ही शिक्षा रखता है: विद्या में धनी ब्राह्मण, जिन्होंने प्रभु की याचना को यों ही जाने दिया, और योग्यता में निर्धन उनकी पत्नियाँ, जिन्होंने उनके लिए सब कुछ छोड़ दिया। कृष्ण उन स्त्रियों को अपनाते हैं, उन्हें सिखाते हैं कि उनमें लगा मन उन्हें पा लेता है, और उन्हें सम्मान सहित घर भेजते हैं; और पत्नियों के प्रेम से जागे ब्राह्मण अपना मोह स्वीकार कर क्षमा माँगते हैं। हम भी प्रभु के विषय में जो सुनें, उसे प्रेम में पकने दें, और वे जिस भी रूप में माँगने आएँ, उन्हें पहचान लें।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, *श्रीमद्भागवत महापुराण* (सम्पूर्ण), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), त्रयोविंश प्रवचन।
- श्रृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़्डम · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-23-the-brahmanas-wives-blessed-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज़्डम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट